Index/अनुक्रमणिका

01. Index/ अनुक्रमणिका 01
02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 03/04
03. Referee Board 05
04. Spokesperson 07
05. Sustainable Energy 09
(Dr. Neeraj Dubey)
06. An Overview of Cyber Crime : Types and Preventions 12
(Naveen Dodeja, Prof. Shiv Singh Sarandevot)
07. Muted Woman In The Sound And The Fury 15
(Disha Sharma)
08. दिव्यांगजनों को उच्च शिक्षा में आने वाली समस्याएं 17
(डॉ. दिव्या शुक्ला)
09. 'साक सुन्ना प्रीत पित्तल' क्हानी संग्रैह् च चित्रत नारी जीवन 19
(डॉ. दीपिका मैहरा)
10. डोगरी उपन्यासें च मध्यम वर्ग दी राजनीति च सक्रिय हिस्सेदारी 21
(डॉ. मनोज हीर)
11. ''वैश्विक जरूरतां बनाम खेतरिय पंछान'' डोगरी भाषा दे संदर्भ च 23
(सोनिका जसरोटिया)
12. डोगरी लोक-गीतें च गैह्ने-बंधे 25
(डॉ. प्रीति रचना)
13. डोगरी क्हानियें च धार्मिक भाईचारा : इक नज़र 28
(शिव कुमार खजुरिया)
14. बाबा शिवि जी आस्था ते मानता आहले देव स्थान दे इतिहास उप्पर इक झांक 30
(शमा रानी)
15. जबालदर्शन उपनिषद् में अष्टांग योग 31
(डॉ. पुनीत कुमार मिश्र)
16. ''हयवदन'' का सम्यक विवेचन 35
(डॉ. रमेश टण्डन)
17. हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा विज्ञान की उपयोगिता 37
(संदीप सिद्ध)
18. भारत का पिकासो-'मकबूल फिदा हुसैन' 40
(डॉ.यतीन्द्र महोबे)

''हयवदन'' का सम्यक विवेचन

डॉ. रमेश टण्डन *

शोध सारांश – हयवदन, देवदत्त, कपिल जैसे अद्‌भुत पात्रों के अनुशीलन करने वाले गिरीश कर्नाड ने अतृप्त वासना, विलासिता, चंचल स्त्री की मनोवृत्ति, पूर्णांग न होने की व्यथा, स्वयंबर में राजकुमार को न चुनकर एक पशु को चुनने जैसी कथावस्तु का समावेश, देवी माँ और गुड़िया जैसे पत्थर व निर्जीव चरित्रों का वार्तालाप करना, मृत व्यक्ति का जिंदा होना, हयवदन जैसे काल्पनिक चरित्र का निर्माण करना आदि विचित्र कथावस्तु के साथ 'हयवदन' नाटक की रचना करते हुए रंगमंच की दृष्टि से तथा नाटक के तत्त्वों के आधार पर विभिन्न शैलियों का समावेश कर एक सफल नाटक को पाठक के समक्ष रखा है।

प्रस्तावना – ''हयवदन'' का नाम सुनते ही हयग्रीव अवतार की कल्पना होती है, जो विष्णु का एक अवतार है। लेकिन हयवदन नाटक में ऐसा कुछ भी नहीं है और न हीं इसका उस अवतार से कुछ लेना-देना है। हय का अर्थ है- अश्व, वदन का अर्थ है- मुख; अर्थात् अश्व मुख। गिरीश कर्नाड ने इस नाटक में पुरूष एवं नारी की पूर्णता एवं अपूर्णता अथवा नारी की वासना की ओर संकेत करते हुए एक नूतन कल्पना की है।

हयवदन एक लोकनाट्य है, अत: प्राचीन एवं लोकनाट्य शैली से ही वह प्रारम्भ होता है। कथावस्तु दो भागों में विभक्त है- 1. उपकथा- इसमें हयवदन अपने जन्म की कहानी भागवत को सुनाता है कि कैसे उसकी माँ, जो कि कर्नाटक की राजकुमारी थी; ने सौराष्ट्र के राजकुमार के सफेद घोड़े से शादी की और एक मनुष्य तथा एक घोड़े के संयोग से एक 'हयवदन' का जन्म हुआ, जिसका मुख घोड़े के समान और शरीर मनुष्य के समान था। यह पूर्ण मनुष्य बनना चाहता है। 2. मूलकथा- इसमें देवदत्त और कपिल दो मित्र हैं। देवदत्त का विवाह पद्मिनी से होता है। कपिल पर भी पद्मिनी मोहित हो जाती है। देवदत्त कोमल शरीर का कवि है एवं कपिल कठोर शरीर का सशक्त पुरूष। तीनों उज्जैन की यात्रा पर जाते हैं, जहाँ देवदत्त, देवी माँ के समक्ष अपने आप को उत्सर्ग कर देता है और कपिल भी। पद्मिनी की स्तुति पर देवी माँ दोनों को जिंदा कर देती है, परन्तु पद्मिनी की भूल से दोनों के सिर अलग-अलग धड़ से जुड़ जाते हैं। इस अदला-बदली में द्वन्द्व होता है। बाद में देवदत्त का पुत्र बचता है। तीनों की मौत हो जाती है। नाटक का अंत पुन: उपकथा से होता है, जिसमें हयवदन पूर्ण घोड़ा बन गया है, परन्तु आवाज मनुष्य की तरह। देवदत्त का पुत्र हयवदन को ही, ही, ही हँसने के लिए कहता है। लेकिन बनावटी ही ही ही करते हुए उसकी आवाज हिनहिनाहट में बदल जाती है। इस प्रकार दादा को पोते, पोते को हँसी और घोड़े को हिनहिनाहट मिल जाती है। हयवदन, पूर्ण मनुष्य न बनकर, पूर्ण घोड़ा बन जाता है।

गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित कन्नड़ नाटक 'हयवदन' में कुल 10 पात्र हैं- पुरूष पात्र- 1. भागवत, 2. नट-1, 3. नट-2, 4. हयवदन, 5. देवदत्त, 6. कपिल, महिला पात्र- 1. पद्मिनी, 2. गुड़िया-1, 3. गुड़िया-2, 4. देवी माँ।

उपकथा- नाटक के प्रारम्भ में नट, भागवत को विचित्र प्राणी 'हयवदन' के बारे में बताता है। भागवत को विश्वास नहीं होता। उसके सिर को मुखौटा समझकर उतारने का प्रयास करता है। पर हकीकत यह थी कि हयवदन का सिर अश्व का था और धड़ मनूष्य का। हयवदन आगे बताता है कि उसकी माँ कर्नाटक की राजकुमारी थी। उसके पिता ने उसके विवाह के लिए स्वयंबर रचा। दूर-दूर से; चीन, फ्रांस, रूस से भी राजकुमार आए परन्तु कोई पसंद नहीं आया। अंत में सौराष्ट्र के राजकुमार, जो सफेद घोड़े में सवार होकर आया, को देखकर वह अचेत हो गई। जब होश आया तो उसने चौंकाने वाली बात कही, उसे सौराष्ट्र का राजकुमार नहीं बल्कि उसका घोड़ा पसंद आया था। किसी तरह उसकी शादी घोड़े से कर दी गई। 15 वर्ष तक खुशहाल जिंदगी बीतने के बाद, एक दिन हयवदन की माँ ने घोड़े को गायब पाया, उसकी जगह एक गन्धर्व खड़ा था, जो राजा कुबेर के श्राप से घोड़े की योनि में जन्म लिया था और अब 15 वर्ष तक मनुष्य का प्रेम पाकर श्रापमुक्त हो गया था। हयवदन के गन्धर्व पिता ने इन्द्रपुरी चलते समय उसकी माँ को साथ चलने को कहा परन्तु इसने मना कर दिया और उसे पुन: घोड़ा बन जाने को कहा। गन्धर्व ने नाराज होकर इसकी माँ को तुरन्त घोड़ी बनने का श्राप दे दिया। इस प्रकार घोड़े और मनुष्य के संयोग से उत्पन्न 'हयवदन' ने अपने जन्म की कहानी भागवत को नाटक के पूर्वार्द्ध में सुनायी। हयवदन इस अभिशाप से मुक्त होने के लिए ईदगाह गया, पर लाभ नहीं मिला। भागवत ने उसे चित्रकूट जाकर महाकाली की पूजा करने का परामर्श दिया।

मूलकथा- धर्मपुरी में दो युवक हैं और दोनों एक-दूसरे के गहरे मित्र हैं। एक का नाम- देवदत्त है। यह विप्र विद्यासागर का पुत्र है, रसिक, विद्धान व सुकोमल शरीर वाला कवि है। कभी-कभी, उसकी होने वाली पत्नी उसे एक बच्चे से ज्यादा कुछ नहीं समझती। दूसरा- कपिल है। ग्रामीण, आदिवासी का पुत्र, बलिष्ठ था, कुश्ती लड़ता था, खेतीबारी करता था, सांवला था। एक दिन देवदत्त, अपने ही नगर के एक धनी सेठ की कन्या 'पद्मिनी' से आसक्त हो गया और विवाह करने की इच्छा जाहिर की। कपिल ने पद्मिनी के घर जाकर शादी की बात की और देवदत्त की पद्मिनी से शादी हो जाती है। देवदत्त ने कपिल के उपकार को नहीं भूला, पुरानी मित्रता पहले की तरह फलती-फूलती रही। धर्मपुरी के नागरिक इन्हें राम-सीता-लक्ष्मण जैसे समझने लगे। तीनों अक्सर साथ रहते थे। छ: माह बीत गए। पद्मिनी गर्भवती हो गई। यह स्वच्छन्द प्रकृति वाली नारी थी, रूप गर्विता थी, कपिल के बलिष्ठ तन को देख उस पर मोहित हो गई। देवदत्त इस पर ईर्ष्या करने लगा। एक दिन पद्मिनी के हठपूर्वक कहने पर उज्जैन जाने का कार्यक्रम बना। रास्ते में विश्राम करने के लिए बैलगाड़ी को रोके। वहाँ व्यास का आश्रम, भगवान रूद्र का मन्दिर और दूसरी ओर पहाड़ी के पीछे काली का मन्दिर

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया,जिला- रायगढ़ (छ.ग.) भारत

था। देवदत्त ने कपिल और पद्मिनी को रूद्र के मन्दिर भेज दिया और स्वयं दुर्गा मन्दिर चला जाता है। दुर्गा मन्दिर जाते ही देवदत्त को वह वचन याद आ जाता है जिसे, 15 कन्या पर लट्टू होने के बाद 16 वीं कन्या के रूप में पद्मिनी से आसक्त होने पर यह कहते हुए लिया था कि यदि पद्मिनी से मेरा विवाह हो गया तो मैं अपनी दोनों भुजाएँ महाकाली को एवं मस्तक भगवान रूद्र को समर्पित कर दूंगा। फिर क्या था, देवदत्त तलवार से अपना सिर काट देता है। कपिल और पद्मिनी जैसे ही रूद्र मन्दिर से वापस आए, देवदत्त नहीं मिला। दोनों उसे खोजते हुए महाकाली (दुर्गा) के मन्दिर गए, वहाँ देवदत्त की लाश को देखकर कपिल भयभीत हो गया और वह अपना भी सिर काट लिया। दोनों की लाश को देखकर पद्मिनी आत्महत्या करना चाहती है, उसी समय देवी माँ की आवाज सुनाई देती है, जिसके अनुसार, पद्मिनी भूल से कपिल के सिर को देवदत्त के धड़ से, और देवदत्त के सिर को कपिल के धड़ से जोड़ देती है एवं दोनों अलग-अलग सिर के साथ जिंदा हो जाते हैं। अब दोनों पद्मिनी पर पत्नी का हक जताते हैं, परन्तु कपिल का धड़ वाला देवदत्त का हक पद्मिनी पर नियमत: बनने से देवदत्त, पद्मिनी को अपने साथ घर लाता है। पद्मिनी, बलिष्ठ तन व विद्वान मस्तिष्क पाकर खुश हो जाती है। कुछ दिनों तक कपिल धड़ वाला देवदत्त कुश्ती लड़ता है, तलवारबाजी करता है। परन्तु बाद में विद्याध्यन करता है और शरीर पूर्ववत् कोमल हो जाता है। देवदत्त अपने होने वाले पुत्र के लिए उज्जैन से दो गुड़ियाँ ले आता है। दोनों गुड़ियाँ पात्र बन जाती हैं और पद्मिनी की आलोचना करने लगती हैं कि तुम दुराचारिणी स्त्री हो, तुम्हारे सपने में कपिल आता है। दोनों गुड़ियाँ पुरानी हो जाती हैं। तब पद्मिनी, देवदत्त को उज्जैन से नई गुड़ियाँ लाने के लिए भेजती है। इस बीच अतृप्त पद्मिनी अपने बच्चे को लेकर कपिल को तलाश करते हुए घर से निकल जाती है। उधर, कपिल को देवदत्त के कोमल धड़ के साथ प्रारम्भ में परिश्रम करने में कठिनाई होती है, बाद में परिश्रम करते-करते बलिष्ठ हो जाता है। अचानक, पद्मिनी को देखकर कपिल अवाक् रह जाता है। कपिल, पद्मिनी को लौट जाने के लिए कहता है, परन्तु पद्मिनी तो कपिल पर आसक्त रहती है। उसी समय देवदत्त गुड़ियाँ लेकर वन में पहुँच जाता है। देवदत्त और कपिल में द्वन्द्व युद्ध होता है। पद्मिनी देखती रहती है। दोनों मर जाते हैं। पद्मिनी पश्चाताप करती है कि दोनों जले, जिए, जुझे, गले लगे और मर गए। मैं चुपचाप खड़ी रही। मैं कहती, चलो, तुम दोनों के साथ रह लूँगी, तो शायद दोनों अभी जीवित होते। पर मैं यह न कह सकी।.....जीवित रहते तो पशुओं की तरह लड़ते रहते। इसलिए मैं चुपचाप तुम दोनों को मृत्यु की ओर ढकेलती रही। पद्मिनी अपने पुत्र को यह कहकर भागवत को सौंप देती है कि इसे शिकारियों को सौंप देना और कहना कि कपिल का बेटा है और पाँच वर्ष बाद इसे धर्मपुरी के विद्यासागर के पास ले जाना कहना कि यह आपका पोता है। यह कहकर पद्मिनी सती हो जाती है।

उपकथा- उपरोक्त मूलकथा के बाद, हयवदन पूर्ण घोड़ा के रूप में परन्तु आवाज मनुष्य की तरह करते हुए मंच पर प्रगट होता है। पुराना नट, पद्मिनी के पुत्र को लाता है। पुत्र उसे हँसने को कहता है, परन्तु हयवदन बड़ी मुस्किल से ही ही ही करके हँसने की चेष्टा करता है। उसकी ही ही ही, हिनहिनाहट में बदल जाती है। इस तरह दादा को पोता मिल जाता है, पोता को हँसी मिल जाती है और घोड़े को हिनहिनाहट। घोड़ा, स्वयं की आवाज पाकर, हयवदन पूर्णाग हो गया। अंत में भागवत दोनों नटों को कहता है कि विप्र विद्यासागर को यह सूचना दो कि उनका दिग्विजयी पुत्र एक सफेद घोड़े पर सवार होकर उनके सम्मुख उपस्थित हो रहा है।

परन्तु, सम्पूर्ण नाटक में अतृप्त वासना की समस्या, दूसरे की पत्नी पर आकर्षण की समस्या, सिर की अदला-बदली पर उत्पन्न समस्या, सिर कटने पर किसे किसकी संज्ञा दी जाए की समस्या, नायिका की मनोदशा की समस्या व गुड़ियाँ के वार्तालाप की समस्या बीच- बीच में उभरती रही। नाटककार ने 'हयवदन' के माध्यम से पुरूष के भ्रमर चरित्र एवं नारी की विलासिता तथा अन्तर्दशा का चित्रण किया है। 'हयवदन' की उपकथा में मनुष्य के पूर्ण मनुष्य न होने का दर्द है, तो मुख्य कथा में शरीर और मस्तिष्क दोनों की श्रेष्ठता की कामना का प्रदर्शन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गिरीश कर्नाड : हयवदन
2. द्विवेदी, सालिगराम; जैन, डॉ0 नीरज; भारतीय साहित्य
3. अध्ययन आधारित स्वज्ञान
4. http://www.pustak.org/books/bookdetails/3102

****